ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड –VI अंक –VII अक्तूबर, 2014

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- यू आर आई सी एम, गाँधीनगर, गुजरात में उत्तर एवं पश्चिम क्षेत्रों के नोडल अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण सह–कार्यशाला।
- इस माह के कृषि उद्यमी: डॉ. किशोर मठपति
- इस माह का संस्थान : इंडियन सोसाईटी ऑफ एग्रि–बिजिनेस प्रोफेशनलस (आईएसएपी)
- एम किसान पोर्टल

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 -425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

यू आर आई सी एम, गाँधीनगर, गुजरात में उत्तर एवं पश्चिम क्षेत्रों के नोडल अधिकारियों के लिए "कृषि उद्यमिता विकास" पर प्रशिक्षण–सह कार्यशाला

"कृषि उद्यमिता विकास" पर प्रशिक्षण–सह कार्यशाला यू आर आई सी एम, गाँधीनगर, गुजरात में

उदयभान सिंह जी क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान (यू आर आई सी एम), गाँधीनगर, गुजरात में "कृषि उद्यमिता विकास" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला, उत्तर पश्चिम क्षेत्रों के नोडल अधिकारियों के लिए ए सी ए बी सी के तहत 29–30 दिसंबर, 2014 के दौरान आयोजित किया गया। यह कार्यशाला मैनेज, हैदराबाद द्वारा आयोजित किया गया था। उपस्थित भागीदारों में डॉ. आर.के. त्रिपाठी, निदेशक (विस्तार प्रबंधन) तथा श्री साजित कुमार, संयुक्त निदेशक (कृषि), कृषि एवं सहकारिता विभाग, डी ए सी, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. पी. चन्द्रशेखरा, निदेशक, कैड, मैनेज, श्री एच.एस.के. तंगिराला, निदेशक, यू आर आई सी एम, गाँधीनगर, तथा छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, जम्मू व कश्मीर, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश के 18 नोडल प्रशिक्षण संस्थानों के 26 नोडल अधिकारियों ने इसमें सम्मिलित थे।

डॉ. आर.के. त्रिपाठी, निदेशक (विस्तार प्रबंध), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार ने सुझाव दिया कि, ए सी ए बी सी के योजना के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु, कार्यशाला में आत्मा, नाबार्ड तथा बैंक के अधिकारियों तथा एग्रिप्रेन्यूरों के बीच विवरणात्मक विचार–विमर्श होने चाहिए। उन्होंने पार्लियमेंटरी स्थाई समिति के सुझावानुसार विस्तार के पाठ्यक्रमों का पुनर्गठन करने की अनिवार्यता पर जोर दिया। विस्तार मॉड्यूलों एवं सेवाओं संबंधी साहित्य/प्रकाशनों को ए सी ए बी सी प्रशिक्षण के दौरान बाँटना चाहिए ताकि विस्तार सेवाओं संबंधी ज्ञान प्रशिक्षार्थियों को दे सके।

पृष्ट ४ पर .....

भारतीय समस्याओं के लिए भारतीय समाधान

डॉ किशोर मठपति स्वच्छ दुग्ध दोहन के बारे में बतिया रहे है

डॉ. किशोर मठपति (41) महाराष्ट्र राज्य, जिला सातारा के फलटन गाँव के पशुचिकित्सक है। उन्होंने वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन प्रबंधन अभ्यास जिसका नाम ''तोटा मुक्त गोठा'' अर्थात 'लागत–मुक्त गौशाला' उनकी इस नवोन्मेशन को प्रमाणित करते हुए कृषि विभाग महाराष्ट्र सरकार ने किशोर मठपति को 26 जून, 2014 को ''युवा वैज्ञानिक पुरस्कार'' से सम्मानित किया। डॉ. मठपति का कहना है कि इन दिनों ग्राहक माँग के अनुसार दुग्ध व्यापार नहीं है और प्रति गाय दुग्ध उत्पादन में भी कमी है। उनका कहना है कि हालाँकि संकर पशु उपज से अधिक दूध पाया जा सकता है परंतु उनका रख रखाव कठिन है। उन्हें आसानी से रोग लगने का खतरा रहता है उनके दूध देने की अवधि पीढ़ी दर पीढ़ी कम हो जाती है। वास्तव में देसी नस्ल भारतीय वातावरण को अपनाए हुए होते है, और उनसे अधिक दूध मिल सकता है और भैंसों का हल जोतने के लिए भी उपयोग किया जा सकता है।

गीर एक पशु नस्ल है, जो शिक्षणीय है और हिष्ट पुष्ट एवं अपने दुग्ध उत्पादक क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। डॉ. मठपति का कहना है कि पशुचिकित्सक होने के नाते मैंने यह निर्णय लिया कि 'लागत–मुक्त गौशाला' की संकल्पना के साथ गीर गाय की नस्लों को संरक्षित करना होगा। उनकी शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात वे डेयरी किसानों की सेवा करना प्रारंभ किए हैं, जिसमें किसानों के पास 'कृत्रिम गर्भाधान' सेवाएं पहुँचाना जैसी सेवाएं सम्मिलित है। उन्होंने देखा कि आज कल किसान पशुपालन व्यापार से दूर होते जा रहे है क्योकि उत्पादकता दर अधिक है और दूध बहुत कम मिलता है। पशुपालन के लिए वैज्ञा. निक प्रबंधक अभ्यासों को विकसित करने में यही अवरोध मुख्य कारण बने थे। तत्पश्चात उन्होंने 'लागत–मुक्त गौशाला' के नाम से एक मॉड्यूल तैयार किया, जिसमें गौशाला प्रबंधन कि उचित व्यवस्थाएं, देसी नस्लों का चयन, चारा प्रबंधन, शुद्ध दुग्ध उत्पादन, समयानुसार टीकाकरण इत्यादि सम्मिलित है। वे पशुपालन कर रहे किसानों को इन्हीं पर सलाह देते रहे। परन्तु एक अच्छे पशुचिकित्सक होते हुए भी उन्होंने विचार किया और उन्हें लगा कि स्वयं के समझाने का कौशल तथा प्रबन्धकीय अभ्यासों में कमी है जिससे कि उनकी संकल्पना लोगों में महशुस हो सके। इन हालातों में डॉ. मठपति को एग्रि क्लिनिक्स व एग्रि बिजिनेस केन्द्र योजना के बारे में पता चला। उनके मित्रों से इस कार्यक्रम पर मिली जानकारी के साथ डॉ. मठपति ए सी ए बी सी प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केंद्र, बारामति, सतारा जिला, महाराष्ट्र में प्राप्त किए है।

डॉ. मठपति के लिए ए सी ए बी सी प्रशिक्षण वास्तविक बिजिनेस स्कूल था जिससे अपने उद्यमिता कौशलों के विकास, अपने वैज्ञा. निक डेयरी फार्म हेतु अनुभवज्ञता के विकास करने के साथ साथ उद्यमिता को कायम रखने के लिए प्रबंधकीय कौशलों को वृद्धि करने के लिए सहायक रहा है। व्यक्तिगत रूप से उन्होंने अनुभव किया कि कार्यक्रम के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयारी तथा मार्केट सर्वेक्षण महत्वपूर्ण संघटक है। गीर गाय को संरक्षित रखने के उत्साह से उन्होंने अपने डेयरी प्रशिक्षण संस्थान को ''कृष्णा दुग्ध प्रशिक्षण व संशोध न केन्द्र के नाम से स्थापित कर रजिस्ट्रीकृत करवाए है। 'लागत–मुक्त गौशाला' सकल्पना पर प्रशिक्षण सह–परामर्शी सेवा प्रदान करना आरंभ किए है। प्रारंभ में उन्होंने पैकेज ऑफ प्रैक्टीसेस की सूची बनाई और तीन दिवसीय प्रशिक्षण मॉड्यूल में ग्राप बनए है। उदाः (1) जी आई आर गाय को वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धति (2) डेयरी यूनिट (जी आई आर नस्ल) के लिए वीनीयोजनीय परियोजना प्रस्ताव तैयारी (4) गाय को ठोस आहार दिए बिना 3–5 पाँच साल तक दुधरू अवधि को बढाने के लिए प्रबंधकीय विधियाँ।

श्री विजय हरीलाल गवाली (35), गवाली वाड़ा के निवासी, फलटन, जिला सतारा का कहना है कि उनकी यह चौथी पीढी है जो दुग्ध उत्पादन में सम्मिलित है। वे परंपरागत दुग्ध उत्पादन प्रबंधन का अनुसरण कर रहे हैं और न लाभ और न हानि की स्थिति पर टिके हुए है। उन्होंने फलटन संस्थान कृष्णा दुग्ध प्रशिक्षण व संशोधन केन्द्र, को देखा और तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया। वे उपलब्ध संसाधनों की सहायता से समयानुकूल प्रबन्धन प्रक्रियाओं का उपयोग करना आरंभ किए थे। उन्होंने देखा कि साफ सुथरा दुहन, समयानुसार टीकाकरण हरा एवं सुखे घास से दूध उत्पादन में बढोत्तरी हुई। उनके गीर गाय द्वारा दिन में प्राप्त होने वाले दूध में लगभग 2–3 लीटर की बढ़ोत्तरी हुई।

डॉ. मठपति सतारा जिले के 10 गाँवों के 200 किसानों को प्रशिक्षित किए हैं। प्रशिक्षण के बाद, डॉ. मठपति प्रशिक्षार्थी स्वयं के डेयरी यूनिट प्रारंभ करने तक के सारे क्रियाकलाप का पर्यवेक्षण वैयक्तिक रूप से करते थे। यह संस्थान वो कर्मचारियों की सहायता से चल रहा है और इसका वार्षिक टर्नओवर 10 लाख रु. है। आत्मा पूणा क्षेत्र और अभिनव फार्मर्स क्लब, पूणे इस संस्थान के सहयोग में है और डॉ. किशोर मठपति के पर्यवेक्षण में डेयरी फार्मरों के लिए प्रशिक्षण आयोजित कर रहे हैं।

डॉ. किशोर मठपति

कृष्णा दुग्ध प्रशिक्षण व संशोधन केन्द्र, फलटन, सतारा जिला मोबाईल सं. 09421615847

इंडियन सोसाईटी ऑफ एग्रिबिजिनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी): कृषि उद्यमिता का पथ प्रदर्शक

इंडियन सोसाईटी ऑफ एग्रिबिजिनेस प्रोफेशनल्स एक गैर–सरकारी, गैर लाभकारी संगठन है जो भारतीय कंप. नियों का अधिनियम, 1956 की धारा 25 के तहत रजिस्ट्रीकृत है। कृषि एवं पशुपालन विकास, कौशल विकास, जल का बहुआयामी उपयोग, बेहतर सफाई व्यवस्था तथा महिला सशक्तीकरण सहित अन्य अमध्स्तताओं के माध्यम से आई साप ग्रामीण गरीबों के लिए आजीविका अवसर बढ़ाने के लिए कार्य कर रहा है। ग्रामीण समुदायों में से, आईएसएपी की विशेष केन्द्र बिन्दु छोटे एवं मझोले किसान, गरीबी रेखा से नीचे की युवा वर्ग, जो विशेषतः अनुसूचित जाति (एस सी), अनुसूचित जनजाति (एस टी) व पिछड़े वर्गो की महिलाएं रहेगें।

- **विजनः** सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित पुरुष एवं स्त्रीयों के जीवन में गुणवत्त का विकास करना।
- **मिशनः** सततत कृषि, कौशल विकास तथा बाजार मिलन के माध्यम से एक मिलियन घरों के आजीविका अवसरों को बढाना।
- **पहूँचः** आईएसएपी ने 1,50,000 किसान परिवारों 3,667 कृषि उद्यमियों, 8,000 गरीबी रेखा से निम्न युवाओं 3,500 गाँवों, 250 खण्डों, भारत के 17 राज्यों के 70 जिलों के 15,000 महिलाओं के आजीविका अवसर बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अपने विजन और मिशन की प्राप्ति के लिए आईएसएपी निम्नलिखित क्रियाकलापों में सम्मिलित रहा है।

- स्थायी कृषि : उत्पादकता को बढाने, कृषि व्यापार तथा मानव विकास पर केन्द्रित होकर स्थायी कृषि पर तैयार की गयी महध्यस्ताओं के माध्यम से खाद्य एवं पौष्टिक सुरक्षा को दृढ़ बनाना।
- कृषि विस्तार सेवाएं : आत्मा के तहत पी पी पी, फार्म स्कूल, किसान, किसान मित्र, सततत उत्पादकता प्रारंभ, मृदा स्वास्थय सुधार कार्यक्रम, प्रत्यक्ष निरुपण इत्यादि
- छोटे बाजारों के सम्मिलन हेतु किसान उत्पादक संगठनः निवेश, तकनीकी, गुणवत्तापूर्ण निवेश तथा बाजारों के सम्मिलन हेतु छोटे एवं मझोले किसानों की पहुँच को सरल बनाने हेतु किसान उत्पादक समूहों को आईएसएपी बढ़ावा देने के साथ–साथ सुदृढ भी बनाता है।
- आई सी टी आधारित मध्यस्तता : फसल विस्तार सेवाओं को सरल बनाने के लिए प्रदत्त आई सी टी आधारित समाधानों में किसान कॉल सेंटर, सामुदायिक रेडियों स्टेशन (सीआरएस) तथा ई–कृषक सहयोगी नवारंभ के साथ ऐनिमेटेड वीडियो।

ए सी ए बी सी कार्यक्रम के साथ जुड़ना :

श्री शैबल चटर्जी, वरिष्ठ परियोजना प्रबंधक

वर्ष 2007 से, कृषि व्यापार व्यावसायिकों का भारतीय संघ (आई एस ए पी) मैनेज की सहभागिता में मुख्य रूप से उत्तर पूर्वी तथा पहाड़ी/आदिवासी राज्यों में 12 नोडल प्रशिक्षण संस्थानों की स्थ. ापना एग्रिप्रेन्यूरों को प्रशिक्षण एवं हैण्ड होल्डिंग समर्थन देने के लिए की गयी। आईएसएपी निम्न राज्यों में ए सी ए बी सी योजना के क्रियान्वयन में सम्मिलित है वे राज्य हैं – असम, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तरा खण्ड एवं पश्चिम बंगाल कुल पशिक्षण प्राप्त 3,667 आवेदकों में से 1,497 ने कृषि व्यापार स्थापित किए है यथाः एग्रि क्लिनिक्स व एग्रि बिजिनेस केन्द्र, मधुमक्खी पालन, शहद प्रसंस्करण यूनिट, कुक्कुट पालन, बकरी पालन, कस्टम हाईरिंग सेंटर्स, बीज प्रसंस्करण सूनिट, वर्मी कमपोस्टिंग, पशु चिकित्सालय, डैयरी यूनिट, दूध संकलन केंद्र मत्स्य पालन, पशु खाद्य उत्पादन केन्द्र, इत्यादि। सफतला की दर 40.81 प्रतिशत।

आईएसएपी एन टी आई के नेटवर्क परिवीक्षण श्री शैबल चटर्जी, वरिष्ठ परियोजना प्रबंधक आईएसएपी मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा किया जाता है और वैयक्तिक एन टी आई के दैनिक क्रियाकलापों का प्रबंधन तत्संबंधी नोडल अधिकारियों द्वारा किया जाता है। आईएसएपी द्वारा स्थापित एन टी आई का योगदान देश के पहाड़ी, आदिवासी एवं उत्तर पश्चिमी राज्यों में एग्रि प्रेन्यूरों को प्रशिक्षण, बैंक से वित्त सहायता हेतु डी पी आर तैयारी में सहायता करना तथा हैण्ड होल्डिंग समर्थन देना है। इस कार्य की बहुत सराहना की गयी।

इंडियन सोसाईटी ऑफ एग्रिबिजिनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी)
श्री शैबल चटर्जी, वरिष्ठ परियोजना प्रबंधक आईसाप मुख्यालय, नई दिल्ली
दूरभाष सं. 91–8860069915, ई–मेल आईडीः isapmanage@isapindia.org, Website: www.isapindia.org

पृष्ठ – 1..... डॉ. पी चन्द्रशेखरा, निदेशक (कैड), ने सभी एन टी आई द्वारा संशोधित पाठ्यक्रम का उपयोग करने पर जोर दिया है। उन्होंने सभी एन टी आई ओ को स्थानीय परिस्थितियों एवं कृषि व्यापार की संभावता के अनुसार पाठ्यक्रम सामग्री तैयार करने के लिए सुझाव दिया है। उन्होंने ए सी ए बी सी योजना के साथ आत्मा की समाभि रूपता के महत्व को समझाया है और प्रशिक्षण में आत्मा अधिकारियों का सम्मिलित करने के अश्वासन हेतु एन टी आई यों से अपील की है और आत्मा केफटेरिया क्रियाकलापों में से एग्रिप्रेन्यूरों हेतु इयरमार्कड निधि में से 10 प्रतिशत उपयोग करने का सुझाव दिया। श्री साजित कुमार, संयुक्त निदेशक (कृषि), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्यशाला को सभी पणधारियों के लिए एक अच्छा शैक्षिक अभ्यास के रूप में अभिवर्णित किया। श्री एम. ए. वासुदेव राव, परामर्शक केन्द्र, मैनेज, हैदराबाद द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला को समाप्त किया गया।

क्या आप जानते हैं .....

सभी मोबाईल आधारित सेवाएं कृषि मंत्रालय के "एम किसान" पोर्टल द्वारा प्रदान किए जा रहे है।

किसान तथा अन्य पणधारियों के लिए मोबाईल आधारित सेवाएं संगठनों, विभागों तथा केन्द्र व राज्य सरकार के अधिकारियों ब्लॉक स्तर तक (राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि–मौसम विज्ञान संबंधी क्षेत्रीय केन्द्रों सहित) के माध्यम से प्रदान किए जा रहे है। भारतर सरकार, कृषि मंत्रालय के एम किसान पोर्टल द्वारा एक छत के नीचे लाए जा रहे हैं। यू आर एल www.mkisan.gov.in एम किसान पोर्टल कृषि एवं तत्संबंधी क्षेत्रों के मोबाईल आधारित नवीन कार्यों को अपने में सम्मिलित करता है। यह एस एम एस (भेजना और प्राप्त करना दोनों), पारस्परिक वॉयस रेस्पान्स व्यवस्था, अनस्ट्रक्यर्ड सप्लिमेंटरी सर्वीसेस ऑफ डैटा या सू एस एस डी (जो आवश्चक रूप से अंतरक्रियात्मक एस एम एस तथा इंटरनेट के बिना वेब पोर्टलस पर डैटा एन्ट्री एवं पूछताछ को सरल बना सकता है) मोबाईल याप्स तथा सेवाओं को एक जुट करती है। एक किसान पोर्टल अन्य विवरण http://mkisan.gov.in/ aboutmkisan.aspx पर देख सकते हैं।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

"प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि"

"कृषिउद्यमी" श्री बी श्रीनिवास, आईएएस,
महानिदेशक, द्वारा प्रकाशित

हमसे संपर्क करें:
कृषि उद्यमिता विकास केन्द्र, (सीएडी)
कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान
(मैनेज), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद,पिन-500 030, भारत
वेबसाइट: www.agriclinics.net
हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)
ईमेल helplinecad@manage.gov.in

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस
संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर
सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति
: सुश्री ज्योती सहारे
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली